मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था का स्वरूप

अवध नारायण

https://doi.org/ 10.61410/ had.v20i1.229

सारांश :–

मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित थी। आंतरिक एवं विदेशी व्यापार व्यापक पैमाने पर प्रचलित था, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के बीच वस्तुओं का आदान प्रदान होता था। मौर्य शासकों ने मुद्रा प्रणाली को विकसित किया था, जिसमें पण एवं अन्य सिक्कों का उपयोग किया जाता था। इस काल में कर प्रणाली को विकसित किया गया था जिसमें भूमिकर, व्यापाकर और अन्य कर शामिल थे। मौर्य युग में चावल, गेहूँ, कपास, जौ इत्यादि का उत्पादन होता था। उद्योग में कपड़ा, धातु एवं शिल्प उद्योग का विकास किया गया था। व्यापारिक मार्गों के लिए सड़कों एवं नदियों का उपयोग किया जाता था।

सारांश का अंग्रेजी अनुवाद :–

The Mauryan Economy was primarily based on agriculture. Internal and external trade flourished with exchange of good between different regions. The Mauryan Rulers developed a monetary system using coins like Pana etc. In this age taxation system were developed including Land tax, trade tax and other taxes. In Mauryan periodmain crops were droduced such as rice, wheat, barley and cotton etc. In this age Textile, metal and crafts industries were developed. Roads and Rivers were utilized for trade routes.

मुख्य शब्द – व्यवसाय, सोना, जहाज, अर्थशास्त्र, साहूकार

मुख्य शब्द का अंग्रेजी अनुवाद :–

Trade, Gold, Ship, Arthashastra, Monerylender

प्रस्तावना :–

मौर्य वंश का इतिहास चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्यारोहण से प्रारंभ होता है और इस वंश अवसान पुष्यमित्र शुंग द्वारा अंतिम मौर्य शासक ब्रहद्रथ के वध से होता है। विंबिसार, अजातशत्रु एवं नंदवंश के राजाओं ने जिस मगध साम्राज्य पर शासन किया हो, उसी मगध साम्रज्य को मौर्य वंश के सम्राटों ने उन्नति की चरमकाष्ठा तक पहुँचाया। मौर्य सम्राटों ने भारत को सुख, शांति एवं समृद्धि से परिपूर्ण करके उसके सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास में बहुत बड़ा योगदान दिया। इस युग में यातायात के मार्गों का सुधार और निर्माण देशव्यापी आंतरिक शांति और व्यवस्था, विदेशों से घनिष्ट सम्पर्क आदि से आर्थिक जीवन की प्रगति को प्रोत्साहन मिला।

अध्ययन का उद्देश्य :–

मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था के अध्ययन से प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास, सामाजिक एवं आर्थिक संरचना की समझ मिलती है। इतिहास के विद्यार्थियों, शोधार्थियों, प्राध्यापकों एवं इतिहास में रूचि रखने वालों को मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था से अवगत कराना है और भविष्य में उनके द्वारा किए जाने वाले शोध कार्य में सहयोग भी प्रदान करना है।

- सह–आचार्य इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या।

साहित्यावलोकन :–

मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था पर अनेकों विद्वानों ने महत्वपूर्ण पुस्तकों की रचना की है, जिनमें से कुछ इतिहासकारों की रचना का उल्लेख करना आवश्यक है। ओम प्रकाश की प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, ए0एल0 वाशम की दी वन्डर दैट वाज इंडिया, आर0सी0 मजूमदार की कॉर्पेरेट लाइफ इन ऐन्शन्ट इंडिया, आर0एस0 शर्मा की लाइट ऑन अर्ली इंडियान सोसाइटी एंड इकोनोमी, रोमिला थापर की अर्ली इंडियन हिस्ट्री, उपिन्दर सिंह की ए हिस्ट्री ऑर ऐन्शन्ट एण्ड अली मिड्यीवल इंडिया, संतोष कुमार दास की प्राचीन भारतीय आर्थिक इतिहास, बी0 चट्टोपाध्याय की प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था नामक पुस्तकों पर उक्त विद्वानों ने मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था पर अपना–अपना विचार व्यक्त किया है। इनके अध्ययन में मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था के संदर्भ में बहुत सी सामग्री का छूट जाना स्वाभाविक है। प्रस्तुत शोध पर मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था की स्थिति को उद्घाटित करने का एक विनम्र प्रयास किया गया है।

मुख्य पाठ :–

मौर्य युग में भारत कृषि प्रधान देश था और कृषि लोगों का प्रमुख व्यवसाय था। कौटिल्य[1] ने कृषि, पशुपालन और व्यापार के लिए 'वार्ता' शब्द का प्रयोग किया। ये तीनों वैश्यों का व्यवसाय बताया गया है। रामायण[2] एवं महाभारत[3] में भी कृषि एवं पशुपालन की महत्वपूर्ण व्यवसाय के रूप में अभिव्यक्त किया गया है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में मौर्यकालीन सम्राटों का बहुत बड़ा योगदान था। इस काल में जिन भूखंडों पर कृषि कार्य नहीं होता था, ऐसे भूमि को अनुदान के रूप में शूद्रों को प्रदान किया गया और उनको सरकार की ओर से धन, बैल एवं बीज उपलब्ध करा करके खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। फलतः कृषि उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि हुई। मौर्य काल में कृषि की प्रमुख उपजों में गेहूँ, जौ, चना, चावल, गन्ना, उड़द, मसूर, सरसों, कपास, मटर इत्यादि का उत्पादन होता था। फलों में आम, जामुन, अनारे,[4] अँगूर, खरबूजा, किशमिश, कटहल, नींबू, सिंघाड़ा, नारियल, खजूर, बेल[5] इत्यादि के उत्पादन का उल्लेख किया जा सकता है। मसोलों में सफेद सरसों, धनिया,[6] एलाइची, दालचीनी, बालछड़[7] आदि के उत्पादन का प्रमाण मिलता है। सिंचाई के लिए राज्य की ओर से कुएँ, तालाब, झील, बाँध, नहर इत्यादि की समुचित व्यवस्था थी। चाणक्य ने अपने ग्रंथ अर्थशास्त्र में घी, शहद, चर्बी, मछलियों का चूर्ण, गोबर, राख इत्यादि का खाद्य के रूप में प्रयोग बताया है।[8] मेगस्थनीज ने कृषकों के साथ–साथ गोपाल का भी उल्लेख किया है। इससे प्रतीत होता है कि मौर्यकाल में दूध–दही का व्यवसाय भी उन्नत अवस्था में फल–फूल रहा था।

मौर्यकाल में उद्योग–धंधे समुन्नत अवस्था में था। उद्योग धंधों में ताँबा, लोहा, सोना, काँसा, हाथीदाँत, इत्र, पत्थर के बर्तन, शीषे के बर्तन, मृदभांड, टोकरियां, चटाइयां, सूती वस्त्र, रेशमी वस्त्र आदि का उल्लेख मिलता है। रेशमी व सूती वस्त्र व्यवसाय उस युग में श्रेष्ठ अवस्था में था।[9] इस व्यवसाय हेतु काशी, मथुरा, वत्स, अपरांत एवं वंग विशेष रूप से विख्यात था। अर्थशास्त्र[10] से ज्ञात होता हैं कि ऊनी वस्त्रों का निर्माण होता था और विभिन्न प्रकार के कंबल भी बनाये जाते थे। मेगस्थनीज ने विविध प्रकार के बहुमूल्य वस्त्रों का उल्लेख किया है। वस्त्र व्यवसाय के अतिरिक्त अनेक प्रकार की धातुओं का भी काम होता था। धातुओं का व्यवसाय भी उन्नत दशा में था। सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, जस्ता और अन्य धातुओं का प्रचलन बहुतायत रूप से होता था। समुद्र से मणि–माती, रत्न शंख, सीप, आदि निकालने का कार्य होता था। जहाजों और नौका निर्माण भी उन्नत दशा में था। काष्ठ शिल्प एक महत्वपूर्ण व्यवसाय था। पशुओं के चर्म से भी अनेक वस्तुओं को निर्मित किए जाने का उल्लेख अर्थशास्त्र में मिलता है। कुछ लोग सुरा का भी व्यवसाय करते थे यथा–मेदक, आसव, मदु आदि। सुरा निर्माण व क्रय–विक्रय पर राज्य का पूर्ण नियंत्रण होता था। राम शरण शर्मा का विचार है कि मौर्य वंशीय शासकों की शकित का प्रमुख स्रोत धातु उद्योग था। कौटिल्य को धातु उद्योग के महत्व

की पूरी जानकारी थी। उसका मानना था कि कोष में वृद्धि का आधार मूल धातुएं और दण्ड है क्योंकि राज्य की शक्ति कोष और दण्ड से ही बढ़ती है।

मौर्य काल में व्यवसायिक प्रगति हेतु राज्य की ओर से विशेष ध्यान दिया जाता था। व्यवसायियों एवं शिल्पियों को राज्य का संरक्षण प्राप्त था। किसी शिल्पी को हानि पहुँचाना दण्डनीय अपराध माना जाता थां इसके लिए मृत्युदंड का भी नियम था। शिल्पियों का अपना एक संघ था। ये संघ आधुनिक बैंकों की तरह कार्य करते थे और अपने शिल्पी सदस्यों के हितों की रक्षा करते थे। उस काल में व्यापारिक महत्व का उल्लेख हिरण्यकेशि गृहासूत्र में मिलता है जिसमें व्यापार की वस्तु के एक भाग को अग्नि में आहूति दी जाती थी और सोम से आराधना की जाती थी कि वह यज्ञ करने वाले व्यापारियों को अपने पुराने धन को व्यापार में लगाकर अधिक धन कमाने में सहायता करें।[11] मौर्य काल में आंतरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार साम्राज्य में आवागमन के लिए सुरक्षित स्थल मार्ग थे। इस काल का प्रमुख राजमार्ग प्रतिष्ठान से श्रावस्ती,[12] भृगुकच्छ से ताम्रालिप्ति,[13] पाटलिपुत्र से सिंधु के मुहाने पर स्थित पत्तल, चम्पा से पुष्कलावती[14] तथा भृगुकच्छ से पुष्कलावती[15] जाता था। इन बड़े–बड़े राज्य मार्गों और व्यापारिक पथों से बहुसंख्यक उपमार्ग निकलते थे जो छोटे–छोटे नगरों और व्यापारिक केन्द्रों को परस्पर जोड़ते थे। इन मार्गों के सुरक्षा की जिम्मेदारी राज्य के अधिकारी को दिया जाता था।

मौर्य युग में बाह्य व्यापार और सामुद्रिक व्यापार की अत्यधिक वृद्धि हुई। विदेशी व्यापार स्थल और सामुदिक दोनों मार्गों से होता था। चीन, मिश्र, सीरिया, श्रीलंका और पाश्चात्य देशों में अशोक ने बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार किया था। ऐसे देशों के साथ भारत का व्यापारिक संपर्क और मजबूत हो गया था। अर्थशास्त्र में विदेशी सार्थवाहों का उल्लेख मिलता है। मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र में अनेक विदेशी व्यापारी व्यापार के लिए आते थे। भारत मे ंआने वाली विदेशी सामग्री में चीन के रेशमी वस्त्र, ईरान के मोती, सुरा इत्यादि का उल्लेख किया जा सकता है। भारत से वाह्य देशों को जाने वाली सामग्री में एश्वर्य एवं भोग–विलास की वस्तुएँ तथा सुंदर सर्वोत्कृष्ट महीन मलमल प्रमुख थे।

मौर्य काल में व्यापार विनिमय के लिए मौर्य मुद्राएँ प्रचलित थी। इस काल की मुद्राओं में सुवर्ण, काषार्पण, पण, ताँबें का मासक और काकणि मुद्राएँ प्रमुख थी। इस काल में अधिकतर व्यापार चाँदी के सिक्के पण के माध्यम से होता था।[16] सरकारी कर्मचारियों का वेतन भी पणों में दिया जाता था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से ज्ञात होता है कि सिक्के ढालने के लिए सरकारी व्यवस्था थी और अधिकारी उसका निरीक्षण करते थे। सोने के सिक्के का प्रचलन कम था। परन्तु इस काल की अर्थव्यवस्था में व्यापार, जुर्माने, भूमिकर आदि में सिक्कों का बहुत प्रचलन था। टकसाल के शासकीय अधिकारी को 'सौवर्णिक' और 'लक्षणाध्यक्ष' के नाम से जाना जाता था। सिक्कों के प्रचलन होने से साहूकारों को भी प्रोत्साहन मिला। व्यापारी लोग साहूकारों से धन उधार लेते थे और व्यापार करके ब्याज सहित साहूकारों को धन वापस कर देते थे। राजा भूमि के स्वामी से जो भूराजस्व लेता था उसे 'भाग' कहा जाता था। इससे स्पष्ट होता है कि खेती योग्य भूमि पर राजा का स्वामित्व होता था।

राज्य के समस्त क्रिया–कलापों पर सरकार का पूर्ण नियंत्रण होता था। कृषि की उन्नति के लिए पूरा ध्यान दिया जाता था। भूमि को कृषि योग्य बनाने का पूरा प्रयास शासन की ओर से किया जाता था। राज्य की आय का प्रमुख साधन भूमिकर था जो उपज का 1/6 भाग होता था। इस भूराजस्व को 'भाग' कहा जाता था। इसके अतिरिक्त मौर्य काल में कृषकों द्वारा सरकार को कुछ अन्य कर भी देने पड़ते थे। यथा–सेनाभक्त कर, हिरण्य कर, प्रणय कर, विष्टि कर, पशु कर, सिंचाई कर इत्यादि। राजकीय आय के अन्य प्रमुख साधन राजा की व्यक्तिगत भूमि से होने वाली आय, सीमाशुल्क, चुंगी कर, विक्री कर, व्यापारिक मार्गों सड़कों तथा घाटों पर लगने वाला कर, सुरक्षा शुल्क तथा आर्थिक दण्ड के रूप में प्राप्त हुए जुर्माने इत्यादि की गणना की जा सकती है। समस्त करों को एकत्र

करने और आय–व्यय का हिसाब रखने की लिए 'समाहर्ता' नामक पदाधिकारी नियुक्त होता था। प्रांतों में करों को एकत्रित करने की जिम्मेदारी 'स्थानिक' एवं 'गोप' नामक पदाधिकारी की नियुक्ति थी।

आर्थिक समृद्धि से मौर्य काल में अनेक नगरों का निर्माण हुआ था। मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र गंगा एवं सोन नदियों के संगम पर निर्मित था। उस युग में पाटलिपुत्र पुष्पों का नगर, ज्ञान–संस्कृति और ललित कलाओं का भंडार तथा विश्व के नगरों की रानी माना जाता था। इसके समकक्ष कुछ अन्य नगर भी थे यथा– वैशाली, उज्जैन, वाराणसी, तक्षशिला, ताम्रलिप्त इत्यादि। तत्कालीन अभिलेख इस बात की पुष्टि करते है कि मौर्य युगीन भारत में धन–द्रव्य का बाहुल्य था। साँची स्तूप के अभिलेख अनेक धनी व्यापारियों के दान–उपहारों का उल्लेख करते है। देश में मंदिरों, देवालयों, मठों और बिहारों को अधिक दान देने की प्रथा का प्रचलन था।[17]

निष्कर्ष :–यह कहा जा सकता है कि मौर्य युगीन अर्थव्यवस्था प्राचीन भारत में एक महत्वपूर्ण और विकसित अर्थव्यवस्था थी जिसमें कृषि, व्यापार, उद्योग, और शिल्प सभी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। इस युग में मौर्य साम्राज्य की स्थापना हुई, जिसमें भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश हिस्सों को एक ही शासन के अंतर्गत लाया और अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संदर्भ :–

1. कौटिल्य 1, 4 पृ0–8
2. महाभारत 2, 5, 79
3. रामायण 2, 67, 12
4. पंतजलि सूत्र 1, 1, 1
5. ओम प्रकाश 7 फूड एण्ड ड्रिंक्स इन ऐन्शन्ट इंडिया पृ0–17
6. कौटिल्य – 2, 15, 12
7. मैक्रिंडिल पृ0–28
8. कौटिल्य – 2, 20
9. कौटिल्य – 2 अध्याय–11
10. कौटिल्य – 2अध्याय–11
11. हिरण्यकेशि गृहासूत्र – 1, 15, 1
12. हिरण्यकेशि गृहासूत्र – पृ0–41
13. जातक ग्रंथ – 2, 112;
14. स्ट्रैबो – 15, 1, 11
15. पेरिप्लेस – 47
16. कौटिल्य – 11, 12
17. एस0के0 मैटी, अर्लीइंडियन कवाइन्स एंड करेंसी सिस्टम पृ0–26